इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)

गायन / स्वरवाद्य पाठ्यक्रम

पी–एच.डी. प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम 2013

1.	संगीत का इतिहास	• संगीत की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मान्यताओं का अध्ययन। इस सम्बन्ध में भारतीय एवं पाश्चात्य मतों का परिचय। वैदिक एवं शिक्षा ग्रन्थ, पौराणिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत, मौर्य व गुप्त काल के संगीत का परिचय। • ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों का अध्ययन। मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन। • मुगल काल से अब तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास अष्टछाप के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय।
2.	संगीत शास्त्र के सिद्धान्त	• बाइस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना। श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न माप (प्रमाण श्रुति, उपमहती श्रुति और महती श्रुति)। शारंगदेव, रागार्णव, व्यंकटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन। • वादी स्वर से राग गायन के समय का संबंध। संधि प्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर, परमेल प्रवेशक राग की जानकारी। • गांधर्व–गान, मार्ग–देशी संगीत, ग्राम, मूर्छना, जाति, मार्ग–देशी एवं ग्राम–मूर्च्छना का प्रारंभिक परिचय। प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार। प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। निबद्ध और अनिबद्ध गान का सामान्य परिचय। अनिबद्ध के अंतर्गत रागालप्ति एवं रूपकालप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन। • पं. व्यंकटमखी के 72 मेल, उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक से 32 थाटों की निर्माण विधि एवं एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति। • रागों में तान की रचना करना एवं तिहाई सिद्धान्त। हार्मनी और मेलॉडी। • भरत का श्रुति–निदर्शन एवं शारंगदेव द्वारा उल्लिखित श्रुतिसारणा का परिचय। वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना विधि एवं पं. श्रीनिवास द्वारा उसका स्पष्टीकरण। • स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्ट और उद्दिष्ट का अध्ययन।
3.	पारिभाषिक शब्द एवं अन्य विषय	• संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल), सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), वर्ण, अलंकार (पल्टा), स्थायी, अन्तरा, संचारी, आभोग की परिभाषा। राग एवं थाट की परिभाषा तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन। बोल (मिजराब / जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष, अपकर्ष) की जानकारी। दस थाटों के नाम व स्वर, आश्रयराग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह–अवरोह, रागस्वरूप (पकड़), राग की जाति (औडव, षाड़व व सम्पूर्ण) का अध्ययन। अष्टक, पूर्वांग, उत्तरांग, मींड, कण, खटका मुर्की, आलाप, तान, सूत, जमज़मा और तोड़ा की जानकारी। पूर्वांग वादी–उत्तरांगवादी राग। • ध्रुपद, धमार, ख्याल, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम), तराना, भजन, गज़ल, ठुमरी, टप्पा, चतुरंग एवं त्रिवट गीत प्रकारों की विस्तृत जानकारी। रजाखानी व मसीतखानी गत का परिचय। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, और लोक संगीत की संक्षिप्त जानकारी। • ध्वनि की तीव्रता (Intensity) तारता (Pitch), गुण (Timbre) कालमान (Duration) की जानकारी। कंपन (Vibration), कम्प विस्तार (Amplitude), आवृत्ति (Frequency) का परिचय। स्वर अंतराल (Interval, टोन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन), स्केल– नेचरल स्केल, डायटोनिक स्केल, टेम्पर्ड स्केल। अनुनाद (Resonance), बीट (Beat), प्रतिध्वनि (Echo) एवं उपस्वर (स्वयंभू स्वर, Overtone) प्रमुख स्वर संवादों का अध्ययन। तार की लम्बाई और ध्वनि की आवृत्ति का पारस्पारिक सम्बन्ध। • आविर्भाव, तिरोभाव, नायकी, गायकी, बोलआलाप, बोलतान, कृन्तन, जोड़, झाला, तारपरन तथा लागडाट की परिभाषा। तान के प्रकार। गमक की परिभाषा और उसके प्रकारों का अध्ययन।राग के ग्रह आदि दस लक्षण। वाग्गेयकार की परिभाषा, लक्षण एवं प्रकार। • भारतीय संगीत के लिये कण्ठ संस्कार विधि। स्वरोत्पादक यन्त्र एवं कर्णेन्द्रिय की बनावट का अध्ययन। • रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध। संगीत एवं काव्य का सम्बन्ध

प्रो. डॉ. प्रकाश महाडिक

4.	राग परिचय	• राग यमन, बिहाग, मारूबिहाग, पूरिया कल्याण, श्यामकल्याण, शुद्धकल्याण, • भूपाली शंकरा, कामोद, केदार, हमीर, और तिलककामोद, हन्सध्वनि • भैरव, अहीर भैरव, ,विभास (भैरव थाट), बैरागी (भैरव), बसन्तमुखारी, भटियार, • बिलावल या अल्हैयाबिलावल, देवगिरी बिलावल, यमनी बिलावल, दुर्गा • खमाज, देश, जैजैवन्ती, झिंझोटी, रागेश्री, जोग, कलावती, • काफी, बागेश्री, भीमपलासी पटदीप, • वृन्दावनी सारंग, शुद्ध सारंग, मध्यमाद सारंग, गौड़ सारंग, बहार, देसी, • आसावरी, जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, कौन्सी कान्हड़ा, आभोगी कान्हड़ा, • भैरवी, मालकौन्स, जोगकौन्स, चन्द्रकौन्स, मधुकौन्स, मधुवन्ती • मारवा, पूरिया, बसन्त, ललित, • राग तोडी, गुर्जरी तोड़ी, भूपाल तोडी बिलासखानी तोडी, मुल्तानी, • मियाँ की मल्हार, गौंड़ मल्हार, सूरमल्हार,,
5.	राग वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियाँ	• ग्राम राग आदि दश–विध राग वर्गीकरण का अध्ययन। • राग–रागिनी, थाट–राग तथा शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण राग वर्गीकरण का उदाहरण सहित विस्तृत अध्ययन। रागांग वर्गीकरण का अध्ययन। • भैरव, खमाज, कल्याण, सारंग, तोड़ी, कान्हड़ा, मल्हार एवं बिलावल रागांगो का अध्ययन।
6.	ग्रंथों का परिचय	• दत्तिलम, नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी एवं भरतभाष्यम् का सामान्य परिचय व संगीत से संबंधित अध्यायों की विषय सामग्री की जानकारी। • संगीत रत्नाकर, संगीतसमयसार, संगीतराज स्वरमेल कलानिधी, राग तरंगिणी, 'संगीत पारिजात', 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय।
7.	ग्रन्थकार एवं संगीतज्ञों का परीचय तथा सांगीतिक योगदान	• अमीर खुसरों, विद्यापति, सुरदास, सादारंग–अदारंग, बैजु–बख्शू, गोपाल नायक, हद्दू–हस्सूखाँ, मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास एवं तानसेन। • पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, मौलाबख्श, राजा नबाब अली,, कृष्णानन्द व्यास एवं रवीन्द्र नाथ ठाकुर। • उ. अब्दुलकरीम खाँ, भास्कर बुआ बखले, उ. फैयाज खाँ, उ. बड़े गुलामअली खा, प. एस.एन. रातंजनकर, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर। • बाबा अलाउद्दीन खाँ, उ. हाफिज अली खाँ, पं. रविशंकर, उ. अलीअकबर खाँ, उ. विलायत खाँ, , पं. निखिल बेनर्जी। • उ. बिस्मिल्ला खा, पं. पन्नालाल घोष पं. वी. जी. जोग, डा. एन. राजम, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, और पं. शिवकुमार शर्मा । • संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री, मुत्तु स्वामी दीक्षितर, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस. एम. टैगोर, इ. क्लीमेंन्ट्स, आचार्य बृहस्पति, ठाकुर जयदेव सिंह, श्री पी. साम्बामूर्ती और डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यों का संक्षिप्त परिचय।
8.	गायन एवं तन्त्रीवाद्यों के घराने	• घराने का अर्थ, महत्व एवं स्पष्टीकरण। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन। • ख्याल गायन के दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, जयपुर, किराना तथा पटियाला घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। • सेनिया घराने का सामान्य परिचय,बीन (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखानी सितार एवं सूरबहार का घराना एवं हाफिज अली खाँ के सरोद घराने का अध्ययन। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का सितार एवं सरोद घराना।

प्रो. डॉ. प्रकाश महाडिक
प्रोफेसर - वायलिन
अध्यक्ष सांगीत विभाग, इ. क. सं. वि
खैरागढ़ (छ.ग.) 491881

9.	तन्त्रीवाद्यों का परिचय	• भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन। वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण। • प्राचीन चित्रा, विपन्ची, मत्तकोकिला का परिचय। • मध्यकालीन ग्रन्थों के आधार पर एकतंत्री, आलापनी, किन्नरी, त्रितन्त्री, पिनाकी, वंश एवं मधुकरी वाद्यों का अध्ययन। • रूद्रवीणा, सुरबहार, सितार, सरोद, सारंगी, बेला(वायलिन) बॉसुरी, शहनाई, तानपुरा, सन्तुर के उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन।
10.	स्वरलिपियों का परिचय	• पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे एवं पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर स्वरलिपि व ताल–लिपि का ज्ञान। • स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। स्टाफ नोटेशन (स्वरलिपि) पद्धति का सामान्य परिचय। रागों के आरोह–अवरोह व पकड़ का इस पद्धति में लेखन।
11.	ताल एवं लयकारी	• लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी। • मार्गताल एवं देशीताल पद्धति का अध्ययन। ताल के दस प्राण। ताल एवं छन्द का संबंध। • तिहाई की परिभाषा एवं प्रकार, तिहाई की रचना। अतीत–अनागत की जानकारी। • त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का परिचय एवं उन्हें ठाह सहित ताल–लिपि में दुगुन, तिगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास। • आड, कुआड, बिआड लयों की जानकारी। अंको के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को ताललिपि में लिखने का ज्ञान/प्रचलित तालों को डेढ़ गुन (2 में 3) पौन गुन (4 में 3) एवं सवागुन (4 में 5) इन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

****